अच्छी आदतें डालनेकी शिक्षा ।

किसीने सच कहा है कि आदमी आदतोंका एक गट्ठा है। सचमुच आदमीमें बहुतसी आदतें हैं। उसकी आदतोंसे ही उसके चालचलनका पता लगता है। जैसी जिसकी आदतें होती हैं वैसी ही उसकी चालढाल होती है। अगर आदतें अच्छी हैं तो उसका चालचलन भी अच्छा कहा जा सकता है, लेकिन अगर आदतें बुरी हैं अथवा ख़राब हैं तो उसका चालचलन जरूर बुरा है। आदतोंका ही दूसरा नाम चरित्र अथवा चालचलन है। ये आदतें बचपनमें ही पड़ना शुरू हो जाती हैं और धीरे धीरे जड़ पकड़ती जाती हैं। शुरूमें देखनेवालोंको इनसे कुछ हानि नहीं मालूम होती, परंतु बड़े होने पर जब ये मजबूत हो जाती हैं तो इनका नाम सुनते ही डर लगता है; तब इनसे बचना अथवा इनका छोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है और इनसे जो कुछ सुख या दुःख होता है वह भी कम नहीं होता।

कल्पना करो कि जीते जीके लिए तुम्हारी गर्दनमें एक लोहेका पट्टा डाल दिया गया अथवा पैरोंमें बेड़ियाँ डाल दी गईं। अब तुम हररोज़ सुबहको कैदीकी तरह उठते हो और रातको लोहेके बोझसे थकेहुए

सो जाते हो। सबसे ज्यादह दुःख तुम्हें इस बातका है कि अब तुम इन लोहेकी बेड़ी और जंजीरोंसे अपने आपको जीते जी निकाल नहीं सकते। लाख रोते हो चिल्लाते हो, पर कोई लाभ नहीं होता, परंतु याद रक्खो इस दुःखका सहन कर लेना आदमीकी कितनी ही आदतोंकी अपेक्षा आसान है।

आदतें बहुत जल्द पड़ जाती हैं और खासकर वे आदतें जो बुरी होती हैं। हरएक विद्यार्थीमें कुछ न कुछ खास बातें होती हैं। उसका एक अलग ही ढंग होता है जिसमें उसका समय, उसके कार्यव्यवहार, उसके विचार तथा उसके भावोंकी गति होती है। ये बातें चाहे अच्छी हों चाहे बुरी, थोड़े ही दिनोंमें उसका एक भाग बन जाती हैं और आदतोंका रूप धारण कर लेती हैं। अब बस उसको इन्हींसे रुचि हो जाती है। तुम चाहे कितना ही समझाओ, कितना ही मारो और कितना ही पीटो, उस पर कुछ असर नहीं होता। बहुत दिनोंतक एकसा करते करते उसकी आदत पड़ गई है। उसका छूटना अब मुश्किल है। चाहे उन आदतोंसे उसे हानि ही पहुँच रही हो, चाहे उसका स्वास्थ्य बिगड़ता जाता हो, परंतु उसे कुछ परवा नहीं। यदि तुम किसी आदमीको जो बहुत दिनोंसे एक पुराने गंदे मकानमें रहता है वहाँसे हटा कर किसी दूसरे अच्छे मकानमें रक्खो, तो उसे कभी अच्छा मालूम नहीं होगा। उसको तो उसी गंदे मकानमें रहनेकी आदत पड़ गई है। एक आदमीके बारेमें मशहूर है कि वह बहुत दिनोंतक काल-कोठरीमें रहा। जब वहाँसे निकला तो उसने राजासे प्रार्थना की कि महाराज, मुझे फिर उसी काल कोठरीमें भेज दीजिए, कारण कि जो आदतें मेरी वहाँ पड़ गई हैं अब उनका छूटना केवल

कठिन ही नहीं, किंतु असम्भव हो गया है। मुझे भय है कि यदि मैं उनके छोड़नेकी कोशिश करूँगा तो जिंदगीसे ही हाथ धो बैठूँगा।

सचमुच ऐसा ही है। तुम चाहे जिस आदमीसे जिसकी उमर ४० वर्षके करीब पहुँच गई है, पूछ लो। वह यही कहता सुनाई देगा कि मुझमें यह बुरी आदत पड़ गई है। शुरूमें किसीने मुझे इसके लिए मना न किया परन्तु अब इससे छुटकारा पाना कठिन हो गया है। अब यह मेरी नस नसमें घुस गई है। अब तो यह मरकर ही छूटेगी।

इसलिए विद्यार्थी-अवस्थामें ही इस बात पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिए कि जो आदतें हम सीखें वे अच्छी हों। अच्छी आदतें ही आनंद और लाभको बढ़ाती हैं। बुरी आदतोंसे हमें कोसों दूर रहना चाहिए। बुरी आदतें मरते वक्त तक दुःख देती रहेंगी। जब हमारे सामने अच्छी और बुरी दोनों तरहकी आदतें मौजूद हैं तब हमारा काम है कि छाँटकर अच्छी आदतोंको ग्रहण करें। कारण कि उन आदतोंसे हमें जन्मभर काम लेना है। यदि किसी आदमीको बहुतसी तलवारें दिखाकर कहा जाय कि तुम इनमें से चाहे जो पसंद कर लो, परंतु याद रक्खो तमाम उमर उसीको रखना होगा, वह फिर नहीं बदली जायगी, तो वह आदमी अच्छीसे अच्छी तलवार देखकर लेगा। ऐसे ही हमें चाहिए कि उन्हीं आदतोंको ग्रहण करें जो सब तरहसे अच्छी हैं। तलवार वगैरह चीजें ऐसी जरूरी नहीं हैं, उनके बुरे होनेसे उतनी हानि नहीं होती जितनी बुरी आदतोंसे होती है।

अच्छी आदतोंके ग्रहण करनेमें कोई भय मत करो। जितनी जल्दी हो सके उनको ग्रहण कर लो। यदि तुम इरादा कर लोगे तो बस फिर

उनके हासिल करनेमें कुछ भी देर न लगेगी। अनुमानसे भी शीघ्र तुम उनको सीख लोगे। हरएक कामको हर रोज नियत समय पर करो। नियत समय पर करनेसे कठिनसे कठिन काम भी सरल हो जाता है और जल्दी हो जाता है। अगर कोई काम शुरूमें कठिन मालूम हो तो कोई चिंता न करो। शुरूमें प्रायःकठिनाई हुआ ही करती है। बारबारके अभ्याससे चाहे कितना ही कठिन काम हो, वह भी सरल हो जाता है और उसके करनेमें बड़ी खुशी मालूम होती है। इसी तरह हमारी तमाम आदतें बनती हैं। अगर किसी शारीरिक श्रम करनेवाले मनुष्यसे मस्तक यानी दिमागका काम लिया जाय तो उसका उस काममें बिल्कुल जी न लगेगा और अगर वह करेगा भी तो बहुत जल्द थक जायगा। जिस कामको एक विद्यार्थी ९—१० घंटे बैठकर कर सकता है और उसके करनेमें उसे कुछ भी कष्ट या दुःख मालूम नहीं होता, उस कामको एक पहलवान ४ घंटे भी आरामसे नहीं कर सकता। इसी तरह जिस कामको एक पहलवान अथवा और कोई शारिरिक काम करनेवाला मज-दूर कारीगर १० घंटे बिना थकावटके गर्मीकी मौसममें मई और जूनके महीनेमें कड़ी धूपमें कर सकता है उसको एक विद्यार्थी अथवा और कोई दिमागका काम करनेवाला मनुष्य जाड़ेकी मौसममें, ५ घंटे भी नहीं कर सकता। इसका कारण यही है कि आदमीको जिस तरहके काम करनेकी आदत हो जाती है उसी तरहका काम वह आसानीसे कर सकता है। दूसरे कामोंके करनेमें चाहे वे कितने ही आसान हों उसे मुश्किली ही मालूम होती है।

अब हम कुछ ऐसी आदतोंका जिकर करते हैं जो हमारे ख्यालमें विद्यार्थीके लिए बड़ी लाभदायक हैं। साथमें उन उपायोंके बताने-

का भी प्रयत्न करेंगे जिनसे वे जल्दी ग्रहण की जा सकती हैं। विद्यार्थियोंको चाहिए कि यदि उन्हें संसारके महान् पुरुषोंमें अपनी गणना करानेकी इच्छा है, यदि वे चाहते हैं कि हम सफलतापूर्वक आनंदसे जीवन व्यतीत करें, तो उन्हें अपने चरित्रोंको सुधारना चाहिए, अर्थात् इन आदतोंको ग्रहण करना चाहिए।

१ हर एक दिनके लिए पहलेसे काम सोच लो।

यदि तुम्हें कलको कोई काम करना है तो तुम्हें चाहिए कि आज शामको ही उसका एक क्रम या ढाँचा सोच लो कि इस तरहसे करना है। उसको यदि कागज़ पर लिख लो तो और भी अच्छा है। कल सबेरे उठते ही फिर एक बार उस पर विचार करो। अगर कुछ बदलनेकी ज़रूरत माळूम हो तो बदलकर उसके करनेमें लग जाओ। पहलेसे किसी कामको सोच-विचार लेनेमें और उसका क्रम बनाये रखनेमें बहुत ज्यादह काम हो जाता है। बिना सोचे समझे काम शुरू कर देनेमें, बिना इस बातके विचारे कि किस तरहसे शुरू करें, कब खतम करें, और कैसे खतम करें, कोई काम करने लगनेमें, काम कभी अच्छी तरहसे नियत समयमें पूरा नहीं हो सकता। एक दिन एक आदमी बर्फ़ काट कर रास्ता बना रहा था। शीत बहुत ज्यादह पड़ रहा था। इसमें शक नहीं कि वह जी तोड़ कर श्रम कर रहा था; परंतु उसे कुछ भी सफलता न होती थी। बहुत देर तक खोदते रहने पर भी वह बहुत ही थोड़ा रास्ता बना सका। अंतमें थक कर बैठ गया। थोड़ी देरमें उसने अपने जीमें उस कामका एक ढाँचा बनाया और सोचा कि इस तरह करना चाहिए। उसने रास्तेकी चौड़ाई तथा एक फावड़ेमें जितना बर्फ़

आता था उसको नापा और जिस तरह सोचा उसी तरह खोदने लगा। नतीजा यह हुआ कि १५ मिनटमें इतना खोद लिया जितना पहले ३० मिनटमें भी न खोद सका था। इसी तरहकी बहुतसी मिसालें दी जा सकती हैं। कहनेका मतलब यह है कि क़ायदेसे क्रमानुसार काम करनेसे काम जल्द और आसानीसे हो जाता है। हमने खुद अपने तजरबेसे यह बात देखी है कि जिस दिन हमने क्रमानुसार काम नहीं किया, यों ही अललटप किसी कामको शुरू किया और समयकी कुछ परवा न की, उस दिन हम और दिनोंसे आधा भी न कर सके और आधाचौथाई जो कुछ किया वह भी अच्छी तरहसे न हुआ। यह बात प्रायः छुट्टियोंके दिनोंमें हुआ करती है। उस दिन हम बड़े अभिमानसे कहा करते हैं कि आज क्या जल्दी है, आज तो छुट्टी है। उस दिन हमारे सभी काम देरमें हुआ करते हैं। इसीसे हम उस दिन कुछ नहीं कर पाते।

तजरबेसे मालूम होता है कि जो आदमी नियमानुसार काम करता है उसको अपने काममें ज़रूर सफलता होती है। हमारे एक मित्रकी मेजके पास एक छोटीसी तख्ती टँगी रहती है। उस पर तमाम दिन भरका काम लिखा रहता है। इसको वह सबेरे ही लिख लेता है। शामको वह अपने दिनभरके काम पर नज़र डालता है और उस तख्तीके लेखसे उसका मिलान करता है। अगर कोई काम करना बाक़ी रह जाता है तो उसका बड़ा अफ़सोस करता है और वह अपने जीमें बारबार यही कहता है कि आजका काम मेरा अधूरा रह गया और मेरा समय यों ही फ़िज़ूल गया; लेकिन अगर कुछ बाक़ी

नहीं रहता है और जितना काम उसने सोचा था और तख्ती पर लिखा था वह सब कर लेता है तो उसे बड़ी खुशी होती है। अपनेको बड़ा भाग्यशाली समझता है और अँगमें फूला नहीं समाता। कभी कभी ऐसा होता है कि वह अंदाजा लगानेमें भूल कर जाता है, अर्थात् इतना काम लिख लेता है कि जो किसी तरह शामतक पूरा हो ही नहीं सकता। कभी कभी अचानक मित्र यार दोस्त आजाते हैं और उसके काममें बाधा डाल देते हैं, अथवा और कोई काम लग जाता है जिसके कारण उसका काम आधा भी शाम तक पूरा नहीं हो पाता; परंतु वह इन तमाम कारणों पर शामको विचार करता है। इसी तरह तमाम आदमियों और खासकर विद्यार्थियोंको चाहिए कि अपने दिनभरके कामों पर शामको विचार किया करें और जब देखें कि सब काम इच्छानुसार उत्तम रीतिसे हो गये हैं और किसीमें कोई खराबी या त्रुटि नहीं है तब दूसरे दिनके लिए काम सोचकर तय्यार रक्खें। ऐसा करनेसे सब काम बड़े आनंदसे निर्विघ्न होते रहेंगे और कभी किसी प्रकारकी कोई बाधा न आयगी।

इसमें संदेह नहीं कि यदि क्रमानुसार काम न होगा, अर्थात् जितना तुमने अनुमान किया है उतना न कर पाओगे तो तुम्हें कुछ निराशा अवश्य होगी; परंतु तुम कोई परवा मत करो। तुम दिनदिन उन्नति करते जाओगे और थोड़े ही दिनोंमें देखोगे कि तुमने अपूर्व उन्नति कर ली है और पहलेसे दुगना तिगना काम करने लगे हो। यदि तख्तीकी जगह नोट बुक रक्खो तो और भी अच्छा हो। यह तुम्हारे जीवनकी एक दैनिक डायरी हो जायगी और इसमें तुम्हारे जीवनकी बड़ी बड़ी मनोरंजक और शिक्षाप्रद घटनाओंका संग्रह हो जायगा।

२ लगातार मेहनत किये जाओ।

यदि तुम्हारे मनमें किसी भी कारणसे कभी यह विचार आजाय कि हम बड़े भाग्यवान् और बुद्धिमान हैं और संसारके सम्पूर्ण पदार्थ हमें यों ही अपने आप मिल जायँगे तो तुम्हें चाहिए कि जितनी जल्दी हो सके इस मिथ्या विचारको अपने मनसे निकाल दो। यह तुम्हारा केवल भ्रम है। याद रक्खो, संसारमें कोई चीज़ बिना श्रमके नहीं मिलती। हमें जो कुछ भी मिलता है वह केवल श्रम और पुरुषार्थसे मिलता है। श्रमके बिना एक कौड़ी भी मिलना असम्भव है। इस लिए तुम्हारा कर्तव्य है कि सदैव श्रम करते रहो। पुरुषार्थसे कभी मुँह न मोड़ो और काम चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, सदा उसे सच्चे दिलसे करते रहो। एक अनुभवी विद्वानका कथन है कि छोटे छोटे कामोंको लगातार श्रमसे करनेसे बड़े बड़े काम आसानीसे होने लगते हैं। श्रम करनेकी आदत पड़ जाती है और बस इसीमें सफलता है। यही सफलताकी कुंजी है। श्रममें विलक्षण प्रबल शक्ति है। श्रमसे संसारमें बड़े बड़े आश्चर्यजनक और महत्त्वपूर्ण कार्य होते हैं। रेल, तार, कल, अंजन वगैरह जितनी अनोखी चीजें तुम देखते हो सब श्रमके ही फल हैं। आज हमको प्राचीन कालके विद्वानोंके महान् ग्रंथोंको देखकर बड़ा आश्चर्य होता है और स्वतः प्रश्न होता है कि वे लोग किस तरह इतने ग्रंथ लिख सके। इसका उत्तर केवल एक शब्द है अर्थात् श्रम। श्रमसे ही वे इतने ग्रंथ लिख सके। श्रमके सामने उनका इतने ग्रंथ लिखना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। लगातार थोड़ा थोड़ा काम करते रहनेसे बहुतसा हो जाता है। यदि तुम हर रोज़ किसी किताबका एक पन्ना लिखो, अथवा

पढ़ो तो सालभरमें ३६५ पन्ने होजायँगे और मान लो कि तुमने आजसे ही—जब तुम्हारी उमर केवल १५ वर्षकी है—पढ़ना शुरू किया तो ५० वर्षकी उमर तक—जब तक कि तुमको कमसे कम जीना ही चाहिए—तुम १३ हजार पन्नोंके करीब पढ़ सकोगे ! यदि कोई मनुष्य ३ घंटे प्रति दिन उत्साहपूर्वक निरंतर चलता रहे तो ७ वर्षमें ज़मीनके चक्करके बराबर स्थानको तै कर लेगा !

विद्यार्थीके लिए आलससे बढ़कर कोई बुरी आदत नहीं है। साथमें ही यह बात भी है कि न किसी आदतका ग्रहण करना इतना आसान है और न किसी आदतका छोड़ना ही इतना कठिन है जितना आलसका। आलस विद्यार्थीका सबसे बड़ा शत्रु है। आलसी पुरुष दिन दिन मद्दा (सुस्त) होता जाता है और उसी कहावतका अमल करता जाता है "कि दौड़नेसे धीरे धीरे चलना अच्छा है, चलनेसे एक स्थान पर खड़ा रहना अच्छा है, खड़े रहनेसे बैठना अच्छा है और बैठनेसे लेट जाना अच्छा है।" उस मनुष्यकी दशा बड़ी शोचनीय है जो बड़ा आलसी है और कुछ भी काम नहीं करता है। कारण कि जिस प्रकार लोग कहा करते हैं कि "पागलपनमें बड़ा आनन्द है और वह आनन्द केवल पागलोंको ही मालूम है" इसी प्रकार आलसमें अवश्य बड़ी बड़ी आपत्तियाँ हैं जिनका केवल आलसी पुरुष ही अनुमान कर सकते हैं; हम तुम नहीं। हमें मालूम है कि बहुतसे आदमी ऐसे हैं जिन्हें तुम रातदिन किसी न किसी काममें लगे हुए देखोगे, परन्तु असलमें वे मेहनती नहीं हैं, आलसी हैं। कारण कि जो आदमी अधिक जल्दी करते हैं अथवा अधिक शोर मचाया करते हैं वे केवल बातूनी होते हैं; वे

मेहनतसे कोसों दूर रहते हैं। आप शायद आश्चर्य करेंगे कि यह कैसी बात है; परन्तु ज़रा विचार करनेसे आपका आश्चर्य जाता रहेगा, आप अच्छी तरह समझ जायँगे।

जो मनुष्य अपने कामसे जी चुराता है अथवा अपने कर्तव्यका पालन नहीं करता, वह सदा और और अनावश्यक और निरर्थक काम किया करता है कि जिससे दूसरोंको और स्वयं उसको अपनी मूर्खताका पता न लगे और देखनेवाले समझते रहें कि वह बड़ा मेहनती है। निजकर्तव्यका पालन न करने और निरर्थक कार्य करते रहनेका ही दूसरा नाम मेहनत न करना है। यही आलस है। उदाहरणके लिए वह अध्यापक कभी मेहनती नहीं कहा जा सकता जो तमाम समय विद्यार्थियोंके साथ इधर उधरकी बातें करता रहता है और मतलबकी बात कुछ नहीं बताता। देखनेमें वह हरवक्त काममें लगा रहता है, क्योंकि बातें करना भी एक काम है; परन्तु वह अपने कर्तव्यका जिसके लिए वह नियत है, पालन नहीं करता। उसका काम विद्यार्थियोंको नियत विषयकी शिक्षा देना है, सो वह देता नहीं। वह आलसी है।

यह बात साफ़ जाहिर है कि जो आदमी ज्यादह मेहनती होता है, जिसके पास ज्यादह काम करनेको होता है उसे वक्त भी बहुत मिलता है। उसका समय अनेक भागोंमें बटा रहता है और हरएक भागके लिए कुछ न कुछ काम नियत रहता है। उस कामके पूरा होते ही उसे वक्त मिल जाता है। परंतु जो आदमी आलसी होता है उस पर सदा मरी छाई रहती है और वह हरवक्त समयको उलाहना देता रहता है। उसे कभी समय नहीं मिलता। उस पानीसे जो

गढ़ेमें पड़ा सड़ता हो और बहता न हो, यही अच्छा है कि पानी ज़ोरमें ऊपर किनारोंतक उछलकर आ जाता हो और उनको काट डालता हो। इसी तरह हफ्तों बिना कामके एक जगह पड़े रहनेसे तो यही अच्छा है कि आँधी और हवामें ही सफ़र किया जाय। प्रसिद्ध विद्वान् सिनेका (Seneca) एक पत्रमें अपने मित्रको लिखते हैं कि "मेरी जिंदगीमें एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जिस दिन मैंने कुछ लिखा पढ़ा न हो।" संसार भरके विद्वानोंकी इस विषयमें एक राय है कि यदि मनुष्यको उन्नतिकी अभिलाषा है तो उसे परिश्रमी होना ज़रूरी है। आलसी पुरुष निरे मूर्ख होते हैं। तुम्हें यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि जो मनुष्य नियमानुसार श्रम नहीं करता उसके कितने ही घंटे यों ही व्यर्थमें निकल जाते हैं जिनका उसे ज्ञान भी नहीं होता।

विद्यार्थीगण अपने पढ़ने लिखने तथा दैनिक कार्योंके क्रम और नियम तो प्रायः बहुत जल्दी बना लेते हैं और उनको लिख तक भी डालते हैं, परंतु दुःखकी बात यह है कि वे केवल कागज़ोंमें ही रह जाते हैं। कार्यके रूपमें वे कभी नहीं लाये जाते, अर्थात् उनके अनुसार काम कभी नहीं होता। अनेक विद्यार्थी ज़रा उन्होंने किसी पाठको कठिन देखा अथवा जो उन्हें जल्दी याद न हुआ तो वे उसे छोड़ बैठते हैं। यह उनकी केवल भूल है। श्रमके आगे संसारमें कोई बात भी कठिन नहीं है। कठिनसे कठिन काम भी श्रमसे सरल हो जाता है। जबतक श्रम नहीं किया जाता, हरएक चीज़ कठिन मालूम होती है, परंतु जब श्रम करना शुरू कर दिया जाता है धीरे धीरे वही चीज़ आसान हो जाती है। केवल उत्साहकी ज़रूरत है। उत्साह कभी नहीं छोड़ना चाहिए। लूथर (Luther) का नाम

जगद्विख्यात है। यद्यपि उसको बहुत ज्यादह काम रहता था और रातदिन सफ़र करना पड़ता था तथापि उसने तमाम बाइबिलका अनुवाद बड़ी उत्तमतासे कर लिया। इसका कारण यही है कि वह हररोज़ कुछ न कुछ करता जाता था। एक बार उसके एक मित्रने उससे पूछा कि तुमने इतनी बड़ी बाइबिलका अनुवाद कैसे कर लिया? तो उसने यही उत्तर दिया कि "मैं हररोज़ कुछ न कुछ लिखता गया; मेरा कोई भी दिन खाली नहीं गया। इस लगातार श्रमके फलसे ही मैं इतने बड़े कामको इतनी जल्दी कर सका हूँ।"

एक बार एक फ़ौजी अफ़सरने एक दूसरे फ़ौजी अफ़सरसे जिसका भाई थोड़े दिन पहले मर गया था,पूछा "कि तुम्हारा भाई किस रोगसे मर गया। उसने उत्तर दिया कि उसके पास कोई काम न था। वह सदा खाली रहता था? इसी रोगसे वह मर गया।"इस पर पहले अफसरने कहा कि "हाँ, ठीक है। यह रोग बड़ा भयंकर है। इससे कोई नहीं बच सकता। इसने बहुतोंकी जान ले ली। मसल मशहूर है कि एक जगह रक्खी चीज़को घुन लग जाया करता है। जो चाबी काममें नहीं आती उसे जंग लग जाता है। ऐसे ही आलसी पुरुष भी बिना किसी कामके घुन जाता है।"

डिमास्थनीज़ (Demosthenes) का नाम हर किसीने सुना होगा। वह यूनान देशका एक बहुत बड़ा विद्वान् और वक्ता था। उसने प्रसिद्ध इतिहासकार थ्यूसीडाइड्स (Thucydides) के इतिहासको आठ बार स्वयं अपने हाथसे इस अभिप्रायसे नक़ल किया था कि जिससे वह उस महान् विद्वानकी लेखशैलीसे अच्छी तरह परिचित हो जाय।

एक कहावत है कि परिश्रमी आदमीको एक शैतान सताता है, परंतु आलसी आदमीको हजारों शैतान सताते हैं। ऐसे ही एक दूसरी कहावत है कि शैतान प्रायः लोगोंको फुसलाया करता है, परंतु आलसी आदमी स्वयं शैतानको फुसलाता है। इन दोनो कहावतोंमें बहुत कुछ सचाई है। यदि तुम परिश्रमी बनो और नियमानुसार प्रतिदिन श्रम करनेका अभ्यास करो तो कितनी ही बुरी आदतों और आपत्तियोंसे सहजमें ही बच सकते हो जिनमें तुम आलसके कारण फँसे रहते हो।

गरज यह कि परिश्रम ही सुखका मूल है। परिश्रमसे कभी न डरना चाहिए। शहदकी मक्खियोंको देखो कितने छोटे जीव हैं, परन्तु वे श्रमसे बड़े बड़े छत्ते बनाकर लाखों मन शहद आदमियोंको देती हैं। शांत महासागरमें जो अनेक टापू हैं वे कीड़ोंसे बने हैं। ज़राज़रासे जानवर तिनका तिनका जमा करके कितने कितने बड़े बड़े घोंसले बना लेते हैं। तुमको इन छोटे छोटे कीड़ोंसे उपदेश ग्रहण करना चाहिए। थोड़ा थोड़ा श्रम भी प्रतिदिन करते रहनेसे कुछ कालमें बड़े बड़े काम हो जाते हैं; परन्तु करते रहना चाहिए, शुरू करके बीचमें ही न छोड़ बैठना चाहिए। एक एक बूँद टपकनेसे घड़ा भर जाता है। एक एक ईंट रखनेसे बड़े बड़े किले बन जाते हैं। एक एक अक्षर लिखनेसे बड़े बड़े ग्रन्थ लिखे जाते हैं। थोड़ा थोड़ा निरंतर अभ्यास करते रहनेसे कुछ कालमें मनुष्य बहुत बड़ा विद्वान् हो जाता है।

३ दृढ़ता।

दृढ़तासे यह अभिप्राय है कि जिस कामको शुरू करो उसे लगातार किये जाओ। उसके लिए कभी हतोत्साह मत होओ।

हिम्मत कभी न हारो। हाँ, कामको शुरू करनेसे पहले उस पर अच्छी तरहसे विचार कर लेना उचित है। केवल यह पढ़कर या सुनकर कि उस आदमीने उस काममें उस रीतिसे सफलता प्राप्त की, किसी कामको शुरू न कर देना चाहिए। सम्भव है कि उस मनुष्यको उस रीतिसे सफलता हो गई हो, परन्तु तुम्हें न हो और तुम्हें थोड़े ही दिनोंमें उसे छोड़ देना पड़े। उस मनुष्यने ऐसा किया अथवा वैसा किया, हम भी वैसा ही कर लेंगे, प्रायः शुरूमें ऐसा विचार हुआ करता है, परंतु जब शुरू कर दिया जाता है और उसमें कठिनाई मालूम होती है, तब फिर उससे मन हट जाता है और अंतमें उसे छोड़ देना ही पड़ता है। इसलिए मनुष्यको चाहिए कि काम करनेसे पहले ही उस पर अच्छी तरहसे विचार कर ले। हमें याद है कि एक बार किसी विद्यार्थीने किसी बड़े आदमीके मकान पर यह लिखा हुआ देखा कि "बातचीतमें बहुतसा समय नष्ट हो जाता है।" उसने तत्काल अपने मकानके दरवाजे पर भी बड़े मोटे मोटे अक्षरोंमें उसी बातको लिख दिया। थोड़े ही दिनोंके बाद उसने एक किताबमें पढ़ा कि एक बड़ा विद्वान् ब्लैकस्टोन (Blackstone) की बड़ी प्रशंसा किया करता था, पस उसने उसी समय उपर्युक्त शिक्षाको अपने दरवाजेपरसे हटा दिया और वह ब्लैकस्टोनके ग्रंथोंको बड़े उत्साहसे पढ़ने लगा। कुछ ही दिन बीते थे कि उसने कहीं सुन लिया कि अमुक प्रसिद्ध विद्वान् बातचीतसे ही अपना ज्ञान बढ़ाया करता था। बस अब वह ब्लैकस्टोनके ग्रंथोंको छोड़कर इधर इधर कमरोंमें जाने लगा कि जिससे बातचीतसे अपने ज्ञानको बढ़ा ले। इसके कहनेकी कोई जरूरत नहीं, यह साफ़ जाहिर है कि जिस कालिजमें ऐसे विद्यार्थी हों वहाँ यदि उन सबका ज्ञान एकमें भी

रख दिया जाय तो भी वहाँसे कोई विद्वान् बनकर नहीं निकल सकता। जो मनुष्य सदा हिचकता रहता है और इसी सोच विचारमें रहता है कि इन दो चीजोंमेंसे पहले इसे करूँ या उसे, वह किसीको भी नहीं कर सकता। वह मनुष्य संसारमें कोई भी शुभ या महान् काम नहीं कर सकता जो एक कामका इरादा करता है परंतु जहाँ किसी मित्र सम्बधीने उसके खिलाफ़ कोई बात कही तो तत्काल उसे छोड़ बैठता है; अथवा जिसकी कोई खास अपनी राय नहीं है, जिसकी कभी कुछ राय है कभी कुछ राय है; जो कभी यह विचार करता है, कभी वह विचार करता है; जिसका चित्त सदा डावाँडोल और चंचल रहता है। आपने देखा होगा कि अकसर बड़ी बड़ी इमारतों पर एक चिड़िया बनी रहती है। यह वायुको बताती रहती है और चारों तरफ घूमती रहती है। ठीक ऐसी ही हालत उस मनुष्यकी है। उसके विचार कभी स्थिर नहीं होते। ऐसा मनुष्य कभी उन्नति नहीं कर सकता। वह अपनी जगहसे एक पाँव भी आगे नहीं बढ़ सकता। वह जहाँका तहाँ रह जायगा, यह भी कठिन है। कारण कि संसारमें दो ही अवस्थायें हैं--या तो आगे बढ़ना या पीछे हटना। जो मनुष्य आगे नहीं बढ़ता वह नियमसे पीछे हट जायगा। संसारमें केवल वही मनुष्य उन्नति कर सकता है और वही सफलता प्राप्त कर सकता है जो किसी काम पर उसके करनेसे पहले अच्छी तरह विचार लेता है, फिर उसका पक्का इरादा करता है और पीछे धीरता और वीरताके साथ उसको करना प्रारम्भ कर देता है। अब चाहे कितनी ही आपत्तियाँ आवें और कितनी ही कठिनाइयाँ उपस्थित हों, परंतु वह धीर वीर दृढ़संकल्पी अपने मार्गसे तनिक भी चलायमान नहीं होता। सबको वीरतासे रोंदते

हुए और धीरतासे सहन करते हुए सीधे बेखटके चला जाता है। उसके हृदयमें आशा नित्यश: बढ़ती जाती है और साहस उसको सदैव उत्तेजित करता जाता है। वह पग पग पर ठोकरें खाता है। कभी गिर भी पड़ता है परंतु फिर सँभलजाता है और फिर खड़ा हो जाता है। पैसा पास नहीं, बदनमें जान नहीं, रहनेको स्थान नहीं, परंतु मन बढ़ा हुआ है। दिल अमीर है। बाहरी शक्तियाँ आगे चलने नहीं देतीं, परंतु मन उनको धक्का देकर हटा देता है और आगे लिए बढ़ता है। बदनमें दम न होते हुए भी वह शक्तिसे दुगना तिगना चल रहा है। उसे अपना अभीष्ट स्थान (Goal) सामने दिखलाई दे रहा है। अंदरसे विवेक शक्ति जिसको अँगरेज़ीमें कांशेंस (Conscience) कहते हैं क्षण क्षण पर उसको उभारती जाती है और मानों ज़ोर ज़ोरसे कहती जाती है कि "देख, घबराना मत, वह देख, तेरा अभीष्टस्थान दिखलाई दे रहा है। ज़रासी देर है। अभी पहुँचा जाता है।" वह भी शेरकी तरह बढ़ा चला जाता है। थोड़ी ही देरमें वह अपने स्थान पर पहुँच जाता है। उसका मनोरथ सिद्ध हो जाता है। अब उसके बराबर दुनियामें कोई खुश नहीं और उसकी खुशीका कोई अंदाज़ा नहीं।

अतएव तुम भी जिस मार्गको ग्रहण करो, उस पर दृढ़तासे जमे रहो। कठिनसे कठिन काम भी सरल हो जायगा और बड़े बड़े लोहेके पहाड़ भी मोमकी मानिंद नर्म हो जायँगे। दुनिया भरका ज्ञान तुम्हारे पैरों पर सर झुकाएगा। तुम शीघ्र देखोगे कि संसारका कोई भी पदार्थ तुमसे बचा नहीं रहेगा, परंतु तुम्हारे वे मित्र जिन्होंने तुम्हारे साथ काम शुरू किया था और थोड़े दिनों

पश्चात् ही अपने उस इरादेको छोड़कर और इरादा कर लिया था, नित्य नये नये इरादे ही करते रहेंगे और कुछ भी हासिल न कर सकेंगे। उनका सारा समय और सारी शक्तियाँ योंही फ़िजूल नष्ट होजायँगी और वे अंतमें जैसेके तैसे ही रह जायँगे। 'दृढ़तासे संसार पर विजय प्राप्त करो' यह तुम्हारा सिद्धांत होना चाहिए। तुम सदा इसका अभ्यास करते रहो। तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा कि इससे तुम्हें क्या लाभ होगा, तुम इसके द्वारा संसारमें कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकोगे और कैसी ऊँची हालत पर पहुँच जाओगे।

साहस और दृढ़तासे ही संसारके महापुरुषोंने बड़े बड़े कार्य किये हैं जिनके कारण आज तक उनकी पवित्र कीर्ति उसी तरह जगमगा रही है। यद्यपि आज उनका मृतक शरीर इस-स्थूल जगतमें कहीं दिखलाई नहीं देता तथापि उनका पवित्र उज्वल नाम इतिहासमें चिरकाल तक प्रकाशमान रहेगा। उनकी बड़ाईका एक मूल कारण उनकी दृढ़ता थी। दृढतासे ही वे इतने प्रसिद्ध और विख्यात हुए। ऐसे महापुरूषोंकी संख्या किसी भी देशके इतिहासमें कम नहीं। योरुपमें बारहवें चार्ल्स नामका एक राजा हुआ है। वह चौवीस चौवीस घंटे तक लगातार घोड़े पर सवार रहता था और अपने राज्यमें सर्वत्र चक्कर लगाया करता था। उसके कर्मचारी उसके साथ चलते चलते थक जाते थे, इस कारणसे वह अकेला ही फिरा करता था। एक बार उसका घोड़ा चलते चलते थककर गिर पड़ा और वहीं पर उसका प्राणान्त हो गया! राजाने तुरंत जीन वगैरह सब सामान उसकी पीठ परसे उतारकर स्वयं अपने कंधे पर रख लिया और पैदल चल दिया। उसने इस बातकी कोई परवा न की कि मैं

राजा हूँ, लोग मुझे क्या कहेंगे। उसे अपने कामकी धुन थी। उस धुनके सामने वह शारीरिक कष्टोंको कुछ भी न समझता था। उसकी दृढ़ता और साहसका यह एक छोटासा दृष्टान्त है। इस प्रकारके उसने अनेक कार्य किये। इन्हींके कारण उसको अपने काममें इतनी सफलता हुई। जेम्स गारफील्ड एक दरिद्रके घर पैदा हुए थे। मजूरी कर करके इन्होंने पढ़ा। कितनी ही कठिनाइयाँ आईं; परंतु इन्होंने कभी अपने उत्साहको कम नहीं किया। उसीका फल है कि ये अमरीकाके एक दरिद्रसे दरिद्र घरमें पैदा होने पर भी अपने साहस और बाहुबलसे अमरीकाके सबसे ऊँचे अर्थात् प्रेजीडेंटके पद पर पहुँच गये। अमरीकामें बादशाहको प्रेजीडेंट कहते हैं। इस देशमें बापके पीछे बेटा और बेटेके पीछे पोता राजा नहीं होता, किंतु जो आदमी सबसे अच्छा समझा जाता है, रुपयेमें नहीं किंतु बुद्धिमें, विद्यामें, नीतिमें, न्यायमें, वही बादशाह बना दिया जाता है। संसारमें इससे बढ़कर साहस और धैर्यके फलका कोई उदाहरण नहीं हो सकता। एक नीच ग़रीबके झोपड़ेमें पैदा होने पर भी जेम्स बादशाह बन गया। बुकर टी. वाशिंगटनका नाम आपने सुना होगा। ये भी अमरीकाके एक अतिशय दारिद्र गुलामकी झोपड़ीमें पैदा हुए थे। इनकी शिक्षाका कोई प्रबंध न था। इनकी जातिका पशुओंके बराबर भी हक़ न था। इन्होंने जिस जिन कठिनाईयोंका सामना करके पढ़ा उसका वर्णन करना कठिन है। यद्यपि इनको पग पग पर कठिनाईयोंका सामना करना पड़ा, परंतु ये कभी हतोत्साह नहीं हुए। कालिजमें नौकरोंका काम करके, झाड़ू बुहारी देकरके, होटलमें बरतन माँज करके इन्होंने अपनी शिक्षाका ख़र्च चलाया। उसीका फल है कि आज ये अमरीकामें देवता-

के तुल्य पूजे जाते हैं। ये एक बड़ी भारी संस्थाके संचालक हैं। टस्केजी नामका एक बड़ा भारी विद्यालय इन्होंने स्थापित कर रक्खा है जिसकी जायदाद एक करोड़से अधिककी है जिसमें १६४५ विद्यार्थी हैं और १८० अध्यापक हैं। स्वयं अमरीकाके प्रेजीडेंटने आपके विद्यालयमें पधारकर आपकी तथा आपकी संस्थाकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है।

हिंदुस्तानमें भी ऐसे उदाहरणोंकी कमी नहीं है। ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका नाम बच्चाबच्चा जानता है। आपने किस दृढता और साहससे विद्याभ्यास किया यह सबको मालूम होगा तथापि, यह बतलादेना ज़रूर है कि विद्यार्थी अवस्थामें आपको अपने ही हाथसे भोजन बनाना पड़ता था। वह भी अपने ही लिए नहीं किंतु तीन चार और आदमियोंके लिए भी। यही नहीं बल्कि इन्हींको बरतन भी माँजने पड़ते थे; इन्हीको चौका लगाना पड़ता था और इन्हींको बाज़ारसे सौदा भी ख़रीद कर लाना पड़ता था। जिस घरमें ये रहते थे वह इतना तंग था कि उसमें ये पाँव फैलाकर अच्छी तरह सो भी न सकते थे। इतने कष्टोंको सहन करते हुए भी इन्होंने कभी विद्याभ्याससे मुँह नहीं मोड़ा। उसीका फल है कि ये विद्यासागरके नामसे प्रसिद्ध हुए और अपनी विद्या, सत्यता, दयालुता और परोपकारके कारण इतने प्रसिद्ध हुए कि बंगदेशकी औरतें तक गीतोंमें उनके नामका गुण गान करने लगीं। कर्मवीर गांधीका नाम आपने समाचारपत्रोंमें पढ़ा होगा। ये अपने ही देशके निवासी हैं। इन्होंने दक्षिण अफ़रीकामें देशहितके लिए कितने कष्ट सहन किये, जेल तकमें इनको जाना पड़ा; परंतु इन्होंने कभी अपने श्रम और उत्साहको नहीं छोड़ा और धर्मसे मुँह नहीं मोड़ा।

आज भारतवर्षमें जितने समाज और धर्म दिखलाई देते हैं, इनके नेताओंको घोर कठिनाईयोंका मुकाबला करना पड़ा है यहाँ तक कि मृत्यु तकका स्वागत करना पड़ा है, परंतु वे कभी अधीर नहीं हुए। सदा दृढ़ बने रहे। यही दृढ़ता ही उनकी सफलताका मूल थी। इसीमें उनकी सफलताका गुप्त रहस्य था। महात्मा ईसा (Christ) को शत्रुओंने शूली पर चढ़ाया, उनके सिर पर काँटोंका ताज रक्खा। गुरु गोविंदसिंहके लड़कोंको औरंगजेबने दीवारमें जिंदा चिनवा दिया। मोहम्मद साहबको दुश्मनोंने कितना सताया, महावीरको इंद्रजालिया बताया, निष्कलंकको द्वेपियोंने प्राणांत कर दिया, सर सैयद एहमदखाँको लोगोंने ठहराया नास्तिक बतलाया परंतु इन महात्माओंने कभी अपने पथसे मुँह न मोड़ा: अपने उद्देश्य पर दृढ़ रहे। जिस बातको इन्होंने सत्य समझा उसी-पर ये मरते दमतक अटल रहे। जो इनके विश्वास थे उनका इन्होंने कभी किसी सांसारिक शक्ति या व्यक्तिके डरसे त्याग नहीं किया। अतएव हमारा कर्तव्य है कि हम इनसे अपने लिए शिक्षा ग्रहण करें। हमारा जन्म गारफील्ड और वाशिंगटनकी अपेक्षा कहीं अच्छे घरानेमें हुआ है। हमको गुलामीका दु:ख नहीं, साधन भी हमारे लिए कम नहीं। हमको चाहिए कि हम अपने साहस और दृढ़तासे परिश्रम करें और भारत माताके सच्चे सपूत बनें। इसीमें हमारा और हमारे देशका लाभ है।

प्यारे विद्यार्थियो, भारतवर्षकी अगली दशा, भली या बुरी तुम्हारी ही शक्ति पर निर्भर है। तुम जो आजकलके वंशकी नई पौद वा बच्चे हो, अगले वंशके पिता हो, अर्थात् थोड़े दिनोंमें तुम बड़े हो-

जाओगे और तुम्हारे बच्चे हो जायँगे। तुमको चाहिए कि यदि तुम संसारके महापुरुषोंमें अपनी गणना कराना चाहते हो, यदि तुम्हारे मनमें उन्नति करनेका शौक़ है, यदि तुम गारफ़ील्ड और वाशिंगटन बनना चाहते हो, गोखले जैसी इज्जत हासिल करना चाहते हो तो तुम्हें साहस और दृढ़ता सीखना चाहिए। कठिनाईयों और आपत्तियोंसे स्वप्नमें भी न डरना चाहिए। विद्यार्थीके लिए यह एक बड़ा भारी गुण है। इसके द्वारा तुम अपने हरएक काममें बहुत जल्दी उन्नति कर सकते हो। तुममेंसे बहुतसे विद्यार्थी अकसर कहा करते हैं कि यह काम हमारी शक्तिसे बाहर है, यह हमसे न होगा, सो यह उनकी भूल है। हम पहले बतला चुके हैं कि संसारमें कोई बात भी कठिन नहीं है। कठिनसे कठिन बात भी श्रमके आगे आसान है। कठिन कामका करना ही तारीफ़की बात है। आसान तो सब कोई कर लेते हैं। इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम अभीसे श्रम करने और दृढ़ रहनेका अभ्यास करो और जो तुम बनना चाहते हो उसी आदर्शको सदा अपने सामने रक्खो।

जिस कामको आज करना है उसे आज ही करके छोड़ो, कल पर मत रहने दो। आजका काम कल पर छोड़ देना, यह बुरी आदत है। इस बुरी आदतसे हमारे कितने ही उत्तम विचार और कितने ही उत्तम संकल्प यों ही नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। इस पत्रका उत्तर कल देंगे, अथवा इस कामको कल कर लेंगे, कल छुट्टी है, यह बहुत जल्दी सोच लिया जाता है; परंतु इसका कैसा बुरा नतीजा होगा यह हमें मालूम नहीं होता। अब चाहे देखनेमें कुछ हानि न होती हो, परंतु अंतमें इससे बहुत ज़्यादह हानि होनेका डर है। हमको

धीरे धीरे आजका काम कल पर छोड़नेकी आदत हो जायगी और फिर यह आदत ऐसी पक्की हो जायगी कि हम उन कामोंको भी कर सकेंगे जो बहुत जरूरी हैं। याद रक्खो आजका समय फिर वापिस न आयगा। जो समय चला जाता है वह हमेशाके लिए चला जाता है। एक एक सेकंडको कीमती समझो और उसे अच्छी तरह काममें लाओ। एक समय भी फिजूल न खोओ। जो काम आज करना है उसे आज ही करके छोड़ो। कल पर न रहने दो। जो काम कल पर छोड़ दिया जायगा वह सदैवके लिए रह जायगा, कारण कि वह कल कभी नहीं आयगा। इस प्रकार समय-पर ध्यान रखते हुए नियम और विचारपूर्वक अपना काम किये जाओ।

४. समय पर काम करनेका अभ्यास करो।

संसारमें एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो समय पर काम न कर सकता हो। हरएक मनुष्यमें समय पर काम करने और नियमनिष्ठ बननेकी शक्ति है, परंतु बहुत ही थोड़े ऐसे मनुष्य हैं जो समय पर काम करते हैं। इसमें शक नहीं कि किसी काममें देरी करना आसान है और उसकी अपेक्षा समय पर काम करना बहुत कठिन है, परंतु याद रक्खो समय पर काम करनेकी आदतसे अपनेको तथा औरोंको बहुत लाभ पहुँचता है। समय पर काम करनेवाला मनुष्य असमय काम करने-वाले मनुष्यकी अपेक्षा बड़ी आसानीसे दूना काम कर सकता है और उसके करनेमें उसे तथा दूसरोंको बड़ा हर्ष और संतोष होता है।

हम कुछ ऐसे अशक्त और आलसी हो गये हैं और हमारी आदतें कुछ ऐसी पड़ गई हैं कि हम नियमनिष्ठता और प्रतिज्ञापालनको

बहुत ही कठिन समझते हैं। कठिनताके भयसे ही हम उनका पालन नहीं करते हैं। हममें कुछ मनुष्य ऐसे मूर्ख भी हैं कि वे समझते हैं कि समय पर काम करनेमें कुछ महत्त्व नहीं है, उलटा अनादर है। उनका विचार यह है कि आज ५ बजे शामको अमुक महाशयका अमुक विषय पर व्याख्यान होगा, इसकी सूचना जनसाधारणको हो गई और समय पर लोग आने भी शुरू होगये। अब यदि व्याख्यानदाता पाँच बजेसे कुछ समय पहिले आगये और उन्होंने ठीक ५ बजे अपना व्याख्यान शुरू कर दिया तो इसमें कोई महत्त्व नहीं रहा। महत्त्व इसमें है कि वक्तामहाशय समय पर न आवें, सुननेवाले उनके आनेकी बाट देखते रहें और अपनी नज़रको उसी तरफ लगाये रक्खें जिस तरफ़से वे आते हैं। बहुत समय बीतजाने पर जब आवें तब सबकोई उन्हें हाथों हाथ लेने लगें। ऐसा विचार केवल मूर्खता प्रगट करता है। जितने प्रसिद्ध व्याख्यानदाता और उपदेशक हुए हैं वे प्रायः दृढनियमी थे और समयबद्ध सब काम करते थे। ब्लैकस्टोनके बारेमें लिखा है कि उन्होंने अपने श्रोताओंको कभी एक मिनट भी इन्तज़ार करनेका समय नहीं दिया। इसी तरह हरएक काम हमको ठीक समय पर करना चाहिए। समयपर काम करनेमें किसी तरह भी इज्जतमें बट्टा नहीं लगता उलटी इज्जत बढ़ती है।

यद्यपि समय पर कर्ज़का अदा करना कोई अनोखी बात नहीं है, मामूली बात है, तथापि इसमें भी कितने ही चूक जाते हैं। हम आए दिन देखते हैं कि समय पर कर्ज़ न चुकानेके कारण ही नालिशें होती हैं। बहुतसे आदमी यदि कभी उनको किसी काममें देर हो

जाती है तो कहा करते हैं कि अब देर हो गई, अबसे फिर कभी देर न होगी। यह पहला मौका है। आज ही मैं अपना वचन पूरा न कर सका, कल ज़रूर दे दूँगा। इसी तरहके झूठे वादे लोग किया करते हैं। इससे उनको तथा दूसरोंको जो कष्ट उठाना पड़ता है उसके कहनेकी ज़रूरत नहीं। मनुष्यको उचित है कि हरएक कामको ठीक नियत समय पर करे और जिस समयका वादा किया है उसी समय पूरा करे। एक सेकंडकी भी देरी करनेसे रेलगाड़ी छूट जाती है और इरादे ज्योंके त्यों रह जाते हैं। तुम जो इरादा करो और जो समय उसके लिए नियत करो उसी समय पर उसको करो। यदि तुमने इरादा किया है कि हम ५ बजे सुबहको उठेंगे तो चाहे कुछ हो ५ बजे उठकर विस्तरसे खड़े हो जाओ। यदि तुमने किसीको वचन दिया है कि यह काम हम १० बजे तक कल कर देंगे तो चाहे कुछ हो, उस कामको १० बजे तक करके रहो। यदि तुमने किसी जगह ४ बजे जानेका वादा कर लिया है तो ठीक उसी समय वहाँ पहुँच जाओ।

हमको इस बातमें अँगरेज़ोंसे शिक्षा लेनी चाहिए। तुमने देखा होगा वे कैसे समयके पाबंद होते हैं। उनके सब कामोंका वक्त बँधा रहता है। एक मिनटका भी आगा पीछा नहीं होता। जो समय वे किसी जगह जानेका दे देते हैं ठीक उसी समय वहाँ पहुँच जाते हैं। इसका एक कारण है और वह यह कि वे समयकी कदर जानते हैं। उनको मालूम है कि समय कीमती चीज़ है। दुनियामें हरएक चीज़ मिल सकती है परन्तु गया हुआ समय कभी वापिस नहीं आता। अगर हम देर करेंगे तो औरोंका कितना नुकसान होगा?

अगली दफ़ेमें वे भी देर करके आवेंगे और सबका समय फ़िजूल जायगा। हिंदुस्तानमें यही होता है। हिंदुस्तानके आदमी समयकी रत्ती भर भी कदर नहीं करते। कहने और दिखलानेको हजारों आदमियोंके पास घड़ी है परन्तु घड़ीको अच्छी तरह काममें लानेवाले—घड़ीसे उचित लाभ उठानेवाले सौ पीछे १० भी न मिलेंगे। ‘हिंदुस्तानी वक्त’ मशहूर है। यहाँके आदमी बड़े अभिमानसे कहा करते हैं कि “साहब एक घंटा पहले रक्खो। लोग आनेमें देर करेंगे।” अगर किसी सभा सोसायटीका समय ४ बजे रक्खा जाता है तो काम ५ बजे शुरू होता है। लोगोंको एक इसकी ही आदत पड़ गई है। देरमें जाना ही वे अच्छा समझते हैं। अगर कोई कभी उनसे सवाल कर बैठता है कि “आप सभामें नहीं गये, सभाका वक्त हो गया” तो वे कहा करते है कि “अभीसे जाकर क्या करेंगे? अभी तो वहाँ लोग जमा होने भी शुरू नहीं हुए होंगे।” विचार करनेकी बात है कि यदि सब लोग ऐसा ही समझ लें तो फिर सभा कब हो। बहुतसी जगहोंमें वास्तवमें होता भी ऐसा ही है। नियत समयसे तीन तीन घंटोंके बाद सभा होते हमने स्वयं देखा है!

एक और कारणसे भी लोग सभासोसायटीमें देर करके जाते हैं। वे जैसा हम ऊपर कह आये हैं समझते हैं कि देरमें जानेसे हमारा लोग विशेष आदर करेंगे। सबकी निगाहें हमारी तरफ़ होंगी। यदि हम पहलेसे चले जायँगे तो कोई हमारी तरफ़ देखेगा भी नहीं। यह केवल भ्रम है। उस आदमीकी कोई दिलसे इज्जत नहीं करता जो देर करके जाता है। उसी आदमीकी सब कोई तारीफ़ करते हैं जो ठीक वक्त पर पहुँच जाता है।

यह एक बहुत बुरी आदत है। विद्यार्थियोंको ऐसी आदत कभी न डालनी चाहिए। विद्यार्थी-अवस्थामें उन्हें सब कामोंके लिए समय नियत कर रखना चाहिए और नियत समय पर ही सब काम करने चाहिएँ। पढ़ाई लिखाईका समय नियत हो, खाने पीने, खेलने कूदने, सोने आराम करने सबके लिए पहलेसे समय सोचकर लिख-लेना चाहिए और सब काम उसीके अनुसार करना चाहिए। खेलके समय खेल और पढ़नेके समय पढ़ना चाहिए। जो विद्यार्थी समय पर सब काम करते हैं वे कभी फेल नहीं होते और उनका स्वास्थ्य भी कभी नहीं बिगड़ता। फेल वे ही लड़के होते हैं जो असमय काम करते हैं। असमय पर काम करना मानों प्रकृतिके नियमोंको तोड़ना और असफलताको अपने आप बुलाना है।

कभी कभी ऐसा होता है कि दो काम करने होते हैं। एक उनमें-से ऐसा होता है जो करना ही चाहिए। दूसरा ऐसा होता है कि जिसके करनेको तुम्हारा बहुत जी चाहता है। अब सवाल यह है कि पहले तुम्हें कौनसा काम करना चाहिए, जरूरी या मनका। हमारी रायमें ऐसे समयमें तुमको पहले वह काम करना चाहिए जिसका करना जरूरी है। जैसे मान लो तुम इस समय कुछ लिख रहे हो। आधा पन्ना लिख चुके हो, आधा बाकी है। तुम्हें अभी किसी जगह जाना है। अगरचे तुम्हारा जी नहीं चाहता कि लिखना छोड़कर कहीं जाओ परंतु तुम दूसरी जगह जानेका वादा कर चुके हो, अतः तुम्हें लिखना तुरंत छोड़ देना चाहिए और जहाँ जाना है वहाँ शीघ्र चले जाना चाहिए। यदि तुमने ३ बजे मिलनेका वचन दिया है तो ३ बजेसे इतनी देर पहले चलो कि

जितनी देरमें वहाँ पहुँच जाओ। अगर तुम इस समय लिखना न छोड़ोगे तो केवल यही हानि नहीं होगी कि तुम दूसरे लोगोंकी निगाहमें गिर जाओगे किंतु तुममें अनियमित और असमय काम करनेकी बुरी आदत पड़ जायगी। तुम कभी अपने कर्तव्योंका यथेष्ट पालन न कर सकोगे और न कभी संसारमें प्रतिष्ठाके पात्र बन सकोगे। एक दूसरी मिसाल लो। मान लो कि तुम स्कूलमें पढ़ते हो। वहाँ पर तुम्हें गणित, इतिहास, भूगोल आदि कितने ही विषय पढ़ाये जाते हैं। भूगोल इतिहासमें तो तुम्हारा बड़ा जी लगता है, परंतु गणितका नाम सुनते भी तुम्हें डर मालूम होता है। तुमने अपने मास्टरके कहनेसे अथवा और किसी मित्र सम्बंधीके जोर देनेसे अथवा स्वयं परीक्षामें पास होनेकी इच्छासे एक समयक्रम(Time table) बनाया जिसमें सुबह ६ बजेसे ८ बजेतकका समय तो इतिहासके लिए रक्खा और ८ बजेसे ९ बजे तकका समय गणितके लिए रक्खा; परंतु जब ८ बजते हैं और गणितका समय आता है तो तुम्हारा जी गणित करनेको नहीं चाहता। तुम इतिहास ही पढ़े जाते हो और यह ख्याल करते हुए– कि यह अध्याय पूरा हो जाय तब गणित करेंगे–समयको टालते हो। अध्याय पूरा होते ही कोई और सहपाठी नजर पड़ जाता है उससे बातें करने लग जाते हो। इतनेमें डाक आजाती है; कोई खत होता है उसे पढ़ने लगते हो और तभी उसका जवाब लिखने लगते हो। इतनेमें आठ बज जाते हैं। बस अब तुम यह सोचकर कि खैर आजका समय गया तो गया, कलसे करेंगे–गणितको उठाकर रख देते हो। प्रायः रोज ऐसा ही हुआ करता है। जिस विषयमें विद्यार्थीकी रुचि नहीं होती वह यों ही रह जाता है। इसके

लिए साहस और दृढ प्रतिज्ञाकी ज़रूरत है । जब उस चीज़का वक्त आवे उसी वक्त और सब चीज़ोंको एक तरफ़ रखकर उसमें लग जाना चाहिए । ६, ७ दिन बराबर ऐसा करनेसे जो अरुचि हो रही है, वह जाती रहेगी । अरुचि उसी समय तक रहती है जब तक कि हम उस काममें लगते नहीं हैं । काममें लग जाने पर अरुचि दूर हो जाती है । उल्टी उससे रुचि होती जाती है । थोड़े ही दिनोंमें जब वह हमारी समझमें आने लगती है तो हमें बहुत ही आसान माद्धम होने लगती है ।

अतएव विद्यार्थियो, तुमको उचित है कि सदा नियमनिष्ठ, प्रतिज्ञापालक और परिश्रमी बनो । जो वचन मुखसे निकालो उसे पूरा करके रहो । जो समय जिस कामके लिए नियत करो उसे उसी समय पर करके बैठो । एक पलकी भर देर न करो ।

५. सदा सबेरे उठो ।

उन आदमियोंकी बड़ी उमर कभी नहीं होती और न वे कभी उन्नति करते हैं जो देरमें सो कर उठते हैं। जो आदमी देरमें उठता है वह अपने कामको भी देरमें शुरू करता है और शाम तक भी उसे पूरा नहीं कर पाता । फ्रेंकलिन (Franklin) का भी यही कथन है कि जो आदमी सबेरे नहीं उठता वह दिन भर चलते रहने पर भी सम्भव है कि रातको भी अपने अभीष्ट स्थान पर न पहुँच सके । एक दूसरे विद्वानका कथन है कि मैंने उस आदमीको कभी उन्नत अवस्था पर नहीं देखा जो दिन चढ़े तक बिस्तर पर पड़ा रहा ।

बाफन नामक एक विद्वानने अपने बारेमें लिखा है कि–"जवानीमें मुझे सोनेका बड़ा शौक था। मैं कितने ही दिन चढ़ेतक पड़ा सोता रहता था। इससे मेरा बहुतसा समय यों ही नष्ट हो जाता था, परंतु मैं अपने नौकरका बड़ा आभारी हूँ जिसकी कृपासे मैंने इस बुरी आदतसे अपना पीछा छुड़ाया और सबेरे उठने लगा। मैंने उससे कहा कि यदि तुम मुझे सबेरे छह बजे उठा दिया करो तो मैं तुम्हें प्रतिदिन एक रुपया दिया करूँगा। उस बेचारेने अगले रोज़ मुझे नियत समय पर जगाया, परंतु मैं नहीं उठा। जब उसने कई बार उठनेके लिए कहा तो मैंने उसे दुतकारकर हटा दिया। दूसरे दिन भी उसने उठानेकी बहुत कोशिश की, परंतु मैं नहीं उठा। दोपहरको मुझे अपने समयके नष्ट होने का बड़ा अफसोस हुआ। मैंने नौकरसे कहा कि तुम होशियार नहीं हो। तुमको अपना काम करना नहीं आता। तुम्हें चाहिए था कि तुम मेरी गालियोंकी कुछ परवा न करते और ज़बरदस्ती मुझे उठा देते। तुमने व्यर्थ ही अपने दो दिनके दो रुपये खोये। तीसरे रोज़ नौकरने वैसा ही किया। पहले तो उसने वैसे ही उठानेकी कोशिश की, परंतु जब इसमें सफलता न हुई तो उसने ज़बरदस्ती उठाना शुरू किया। मैंने उससे प्रार्थना की कि थोड़ी देर और सो लेने दे; बड़ी मीठी नींद आरही है—थोड़ी देरमें मैं खुद उठ जाऊँगा, परंतु वह नहीं माना। तब मैंने उसे गालियाँ देनी शुरू कीं और धमकाकर कहा कि जाओ, हट जाओ, बक बक मत करो। इस पर भी नहीं माना, तब मैंने उससे कहा कि देखो, तुम हदसे बढ़े जाते हो, तुम मेरे नौकर हो, छोटा मुँह बड़ी बात। बस चुप रहो, नहीं तो अभी तुम्हारे ठोकर लगाऊँगा। बदमाश मुँह फट नौकरका इतना साहस! परंतु उस पर

इन बातोंका कुछ भी असर नहीं हुआ। उसने मुझको पकड़कर विस्तरसे उठा दिया। मुझे लाचार उठना पड़ा। थोड़ी देरमें जब मुझे होश आया तो मैंने उसका बड़ा आभार माना और उसको एक रुपया दिया। मैंने जो ये १०, १२ ग्रंथ लिखे हैं वे केवल उस नौकरकी कृपासे लिखे हैं। यदि वह नौकर मुझे बलपूर्वक न उठाता तो मैं कभी भी इन ग्रंथोंको न लिख सकता। ये सब ग्रंथ सवेरेके उस सुहावने समयमें लिखे गये हैं कि जो पहले नींदमें नष्ट होता था।

प्रशिया
इस रूसका बादशाह फ्रेडरिक द्वितीय (Fredrick II) बुढ़ापेमें भी जब कि वह बहुत दुर्बल हो गया था सुबहके ४ बजेके बाद कभी नहीं सोता था। ४ बजेसे पहले ही विस्तरसे खड़ा हो जाता था। पीटर जिसकी गणना संसारके महा पुरुषोंमें है, हमेशा दिन निकलेसे पहलेही उठ जाता था। उसने लंदनमें जहाज़ पर बढ़ई और लुहारका काम किया और रूसमें राज्य सिंहासन पर आरूढ़ होकर राज्य भी किया, परंतु वह भी सूर्य निकलनेके बाद विस्तर पर कभी नहीं रहा। उसका कथन है कि मैं अपनी उमरको जहाँ तक हो सकता है, बढ़ाना चाहता हूँ। इसी कारण जहाँ तक हो सकता है कम सोता हूँ। डाडरिज नामक विद्वानकी इस विषयपर यह राय है कि यदि कोई मनुष्य ७ बजेके बदले ५ बजे सुबहको उठे और रातको उसी समय पर सोवे तो ४० वर्षमें उसकी आयु १० वर्ष बढ़ जायगी। वे कहते हैं कि मैंने इसका स्वयं अनुभव किया है और इससे यथेष्ट लाभ उठाया है। मैंने जो कुछ लिखा है वह सब इसी सवेरेके सुहावने समयमें लिखा है। मैं आशा करता हूँ कि दूसरे लोग भी मेरे इस अनुभवसे लाभ उठाएँगे।

सबेरे उठनेके लिए इस बातकी बड़ी ज़रूरत है कि रात-को जल्दी सो जाना चाहिए। जल्दी सोजानेके और अनेक लाभ हैं। आँखोंको और तंदुरुस्तीको इससे बड़ा लाभ पहुँचता है। देरमें सोनेसे आँखें जल्दी कमज़ोर हो जाती हैं और तंदुरुस्ती बिगड़ जाती है। प्रकृतिने इस प्रकार संसारकी चीज़ोंको तरतीब दिया है कि जिस-से रातके पहले हिस्सेमें ही सोजाना अच्छा है। संसारभरके विद्वा-नोंकी इस विषयमें यही राय है कि आधीरातसे एक घंटा पहले सोना पीछेके दो घंटोंके बराबर है। इसलिए तुम इसबातका पक्का इरादा कर लो और अटल नियम बना लो कि १० बजेसे पहले तुम्हारा लेम्प बुझ जाय। १० बजे सोकर तुम आसानीसे पाँच बजे सुबहको उठ सकते हो। छह घंटेकी नींद ज़रूरी है। छह घंटेसे कम सोना तंदुरुस्ती के लिए खराब है। विद्यार्थी आठ घंटे तक भी सोते हैं। प्रोफेसर ब्लैकी-का मत है कि छह घंटेसे कम सोना और ८ घंटेसे ज्यादह सोना मानों रोगोंको अपने शरीरमें स्थान देना है। जो आदमी दिनमें नौनौ दसदस घंटे दिमाग़से काम करते हैं उन्हें मामूली तौरसे ७,८ घंटे नींदकी ज़रूरत है। विद्यार्थियोंको इस बातमें खूब सावधान रहना चाहिए। विद्यार्थी ही इसमें बड़ी भूल करते हैं। परीक्षाके दिनोंमें वे रातको दोदो बजे तक पुस्तक हाथमें लिये बैठे रहते हैं और अनेक बनावटी तरीकोंसे नींदको दबाते रहते हैं। आँखोंमें सरसोंका तेल डाल लेते हैं। नतीजा यह होता है कि थोड़े ही दिनोंमें तंदुरुस्ती खराब हो जाती है, आँखें कमज़ोर हो जाती हैं और ऐनककी ज़रूरत पड़ जाती है।

जब तक तुम इधर जल्दी नहीं सोओगे तब तक उधर जल्दी उठ भी नहीं सकते, परंतु अगर तुम्हारी आदत ११,१२ बजे सोने-

की पड़ रही है तो चाहे तुम १० बजे पलंग पर लेट जाओ, तुमको नींद नहीं आयगी। नींद उसी वक्त आयगी जिस वक्त रोज़ सोते हो। ऐसी हालतमें सुबहको ५ बजे उठना बिलकुल नामुमाकिन है। इसलिए तुमको चाहिए कि जिस तरह हो देरमें सोनेकी बुरी आदतको छोड़ो, चाहे इसके लिए कितनी ही कोशिश करनी पड़े, कितना ही रुपया खर्च करना पड़े। इसकी कुछ परवा मत करो। जल्दी नींद आजानेके अनेक उपाय हैं। बहुतसी किताबें ऐसी होती हैं कि उन्हें पढ़ते पढ़ते नींद आजाती है। तुमको चाहिए कि उनको पढ़ो। इसके सिवाय सबसे अच्छा उपाय यह है कि 'जल्दी नींद आजाय' इसका मनमें दृढ़ निश्चय कर लो। सब बातोंसे मनको हटाकर केवल नींदकी ओर मनको लगाओ। नींदकी ही केवल भावना भाओ। यदि और कोई विचार मनमें आवे तो उसे तत्काल निकाल दो। ऐसा करनेसे अवश्य नींद आजायगी। अगर आज देरमें आयगी तो कल जल्दी आजायगी। इसी प्रकार रोज़ रोज़ जल्द आती जायगी और बहुत जल्द तुम देखोगे कि १० बजे तुमको वैसी ही नींद आने लगेगी जैसे अब ११, १२ बजे आती है। ११, १२ बजे इस कारणसे नींद आती है कि तुमने उसी समय सोनेकी आदत डाल ली है। अब तुम अपने मनोबलसे उस आदतको छोड़ सकते हो और १० बजे सोनेकी आदत डाल सकते हो। एक आदतका छोड़ना और दूसरी आदतका ग्रहण करना निःसंदेह कठिन है और बहुत कठिन है परंतु असम्भव नहीं है दृढ़ प्रतिज्ञाके आगे सब चीजें सम्भव हैं।

सबेरे उठनेकी आदतके डालनेके लिए एक बात और करनी चाहिए। वह यह है कि रातको यह प्रण करके सोओ कि

हम इस समय उठेंगे। सुबहको अवश्य उसी समय तुम्हारी आँख खुलेगी। बस अब तुमको उचित है कि तुरंत बिस्तरसे खड़े हो जाओ। एक पलकी देर मत करो। इसमें संदेह नहीं कि आलस इस समय तुम्हें उठनेसे रोकेगा और तुमको उठते हुए बड़ा कष्ट मालूम होगा, परंतु यही समय आलसके दबानेका है। यदि तुम इस समय उसके फंदेमें आगये तो याद रक्खो कि वह फिर कभी तुम्हारा पीछा छोड़ेगा। परंतु यदि इस समय तुमने आलसको जीत लिया और जी कड़ा करके उठ खड़े हुए तो फिर आलस तुम्हारी तरफ फटकेगा भी नहीं। एक पल भरके आलससे नींद फिर तुमको दबालेगी और तुम्हारे सारे इरादे जाते रहेंगे, तमाम आशाएँ खाकमें मिल जायँगी और सारी आदतें बिगड़ जायँगी।

हमारा यह पक्का श्रद्धान है कि जिसको शुरूसे सबेरे उठनेका अभ्यास है वह बहुत दिनों तक जीवित रह सकेगा, संसारमें अनेक ऋद्धि सिद्धि प्राप्त कर सकेगा तथा सुख और शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकेगा। हम इस विषय पर इस कारणसे इतना ज़ोर देते हैं कि विद्यार्थियोंको प्रायः देरमें सोने और देरमें उठनेकी बुरी आदत होती है। बस, अब हम इतना ही कहकर इस विषयको समाप्त करते हैं कि देरमें सोना और देरमें उठना प्रकृतिके नियमोंके विरुद्ध है। जो मनुष्य प्रकृतिके नियमोंकी अवज्ञा करता है वह नानाप्रकारके रोग व्याधियोंमें ग्रसित रहता है और अंतमें अकाल मृत्युका ग्रास बन जाता है।

६. सबसे प्रेम और प्रीति करो।

तुममें परस्पर प्यार और प्रीति होनी चाहिए। तुम सब एकही ज़ातिके हो। एक ही जगतके निवासी हो और एक ही देशके वासी

हो । तुम सब भाई भाई हो। एकका दूसरेसे गहरा सम्बंध है । एकको एककी ज़रूरत है । दुनियामें कोई भी मनुष्य अकेला अपनी सहायतासे नहीं रह सकता । उसको दूसरोंकी ज़रूरत पड़ती है। खानेके लिए, कपडोंके लिए, रहनेके लिए दूसरोंका मुँह ताकना पड़ता है । अकेला मनुष्य सब चीज़ें पैदा नहीं कर सकता । वह दूसरोंको अपने श्रमसे चीज़ें देता है । दूसरे उसको अपने श्रमसे चीज़ें देते हैं । सब मिलजुल कर एक दूसरेके लाभके लिए काम करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि जो काम जो मनुष्य करता है उसमें उसका लाभ है, वह अपने लाभके लिए करता है, परंतु स्मरण रहे उससे दूसरोंको भी लाभ पहुँचता है । किसान हमारे लिए अनाज़ पैदा करता है । जुलाहा हमारे लिए कपड़ा बुनता है । दर्ज़ी हमारे लिए कपड़ा सीता है । राजा हमारी रक्षा करता है । हम अकेले सब काम नहीं कर सकते । अगर हम अकेले सब काम करें तो एक दिन भी ज़िंदा नहीं रह सकते । गरज यह कि मनुष्य-जातिमें प्राचीनकालसे ऐसा परस्पर संबंध है कि सबको एक दूसरे-की सहायताकी ज़रूरत है इस लिए हमारा कर्तव्य है कि सब आप-समें प्रेम और सहानुभूति रक्खें । जितने मनुष्य हैं सबको प्रेमके सूतमें बाँध लें । इसी शिक्षाका हमें शुरूसे अभ्यास करना चाहिए । पाठशालामें ही इस आदतको सीखना चाहिए। पाठशालामें जितने विद्यार्थी पढ़ते हैं उन सबको अपना मित्र समझो । उनके साथ सदा मीठे वचन बोलो । कोई बात ऐसी न कहो कि जिससे किसीका दिल दुखे । उनके सुख दुःखमें काम आओ । उनके सुखमें सुखी और दुःखमें दुःखी होओ । अकसर लड़कोंमें छोटी छोटी बातों पर लड़ाई भिड़ाई हो जाती है । तुम्हें चाहिए कि ऐसी बातोंको सर्वथा त्याग दो । तुम्हें इस नियमको कभी न

भूलना चाहिए। इसे हृदयमें लिख रक्खो कि तुम औरोंके साथ उसी प्रकार बर्ताव करो जैसा कि तुम चाहते हो कि और लोग तुम्हारे साथ बर्ताव करें। तुम्हें एक दूसरेके भावोंका ध्यान रखना चाहिए और किसीका वृथा जी न दुखाना चाहिए। तुम्हें चाहिए कि ऋजुता और सरलतासे बर्तो। सज्जन पुरुषोंके संगमें रहो। यदि तुम्हारा कोई साथी, तुम्हारे दर्जेका कोई लड़का बुरा काम भी करे तो तुम उसे एकांतमें समझा दो। सबके सामने उसकी हँसी मत उड़ाओ। यदि कोई लड़का तुम्हारी बुराई करे तो तुम कभी बुरा न मानो और न कभी उसके साथ बुराई करनेका ख्याल करो। तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उसके साथ सदय व्यवहार करो। उसके अपकारोंको भूलकर दुखके समय उसकी सहायता करो। वह भले ही तुम्हारे साथ शत्रुता करे, पर तुम उसके साथ हमेशा मित्रका सा व्यवहार करो। कुछ दिनमें वह आप ही आप लज्जित होकर अपना स्वभाव बदल कर तुम्हारे साथ सच्ची मित्रता करने लग जायगा। धीरे धीरे उसका कठोर हृदय कोमल हो जायगा। दिन दिन उसके उद्धत भावका ह्रास होता जायगा। व्यवहारके दोषसे जैसे अपना आदमी पराया हो जाता है वैसे ही व्यवहार गुणसे कट्टर शत्रु भी मित्र हो जाता है।

तुम लोगोंने महात्मा नित्यानन्द देवका नाम सुना होगा। बंगालके प्रसिद्ध दुर्दान्त डाकू जगाई और मधाई दोनों भाइयोंने बड़ी निर्दयताके साथ महात्मा नित्यानंदजी पर अस्त्र चला कर उनको लहू लुहान कर दिया था, परंतु क्षमासागर महात्माजीने प्रसन्न मनसे आनंदपूर्वक उन डाकुओंको लपककर गलेसे लगा लिया। उनके कोमल व्यवहारसे

उन डाकुओंका पत्थरसा कठोर हृदय पानी पानी होगया। उन्होंने साधु महाराजके प्रेम गुणसे मुग्ध होकर घड़ीभरमें ही अपने दुष्ट स्वभावको बदल डाला। देखो महात्माजीके जरासी देरके संगसे वे अतिशय निर्दय डाकू भी सुशील सुजन बन गये।

विद्यार्थियो, तुमको इस कथासे शिक्षा लेना चाहिए। तुम सबके साथ प्रेम करो। दूसरे तुम्हारे साथ अवश्य प्रेम करेंगे। दूसरे तुमको जो कष्ट दें तुम उनको क्षमापूर्वक सहन कर लो। महात्मा ईसाका सिद्धान्त रक्खो, कि यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा गाल उसके सामने कर दो। वह जरासी देरमें शरमिंदा हो जायगा और अपनी भूलपर पश्चात्ताप करेगा। यह शिक्षा तुमको विद्यार्थी अवस्थामें ही अच्छी तरहसे सीख लेना चाहिए ताकि बड़े होकर इसको उपयोगमें ला सको। स्कूल और कालिजमें तुमको केवल विद्यार्थियोंसे ही काम पड़ता है। वहाँसे निकलकर संसारके साथ काम करना होगा। छोटी सोसायटीसे निकलकर बड़ी सोसायटीमें दाखिल होना पड़ेगा। प्रेममें जादूका असर है। तुम्हारी तमाम उन्नति प्रेम पर निर्भर है। यदि तुम सबमें प्रेम है और सच्चा प्रेम है तो तुम्हारी जाति और तुम्हारे देशकी उन्नति होनेमें कुछ भी देर न लगेगी। उन्नति फूटके कारण नहीं होती। आपसी द्वेष तुम्हारे रास्तेमें विघ्न डाल रहा है। तुम इसका सत्यनाश कर दो। फूट और अनेकताका काला मुँह करदो। तुम अपने चरित्रको ऐसा पवित्र बनाओ कि तुम्हारी दयामूर्तिके देखते ही लोग तुम पर मोहित हो जायँ और अपने दुष्ट स्वभावको एकदम त्याग दें।